B.A. Part-I Hons session 2019 -20
Girija uranw Depatt of Psy Paper IInd
R.M.C. Sasaram

लिंग प्रधान अवस्था phallic stage का शेष पेज

बल, साहस, स्वतंत्रता और आतंक आदि का प्रदर्शन करने में विशेष रूचि लेने लगती है।

इस अवस्था में बालक का प्रेम माता से होना स्वाभाविक है पर फ्रायड एवं उनके अनुयायी इस बात पर जोर देते हैं कि लिंग प्रधान अवस्था में बालक मातृप्रेम ग्रंथि (Oedipus complex) विकसित कर लेता है। यह उनकी शैशव लैंगिकता की चरम सीमा होती है। इस प्रेम प्रक्रिया के फलस्वरूप बालक माता से प्रेम करता है और पिता से घृणा करता है और उसे मार डालना चाहता है। बालिकाएं पिता से प्रेम करती है और माँ से घृणा करती है और मार डालना चाहती है। अन्य शब्दों में "son's tendency to fall in love with his mother and wish to marry her and to hate his father and wish to kill him is called oedipus complex." Daughter's tendency to fall in love with her father and wish to marry him and to hate her mother and wish to kill her called electra complex."

विचार यह है कि पुत्र समझता है कि उसका पिता उसकी माता पर आधिपत्य जमाता है और उसे माता के स्नेह से वंचित रखता है। इसी तरह बालिका एवं माता में विरोध पैदा होता है।

अब प्राय: सभी मानते हैं कि बाल्यावस्था में लैंगिकता रहती है और इससे भाव माता-पिता या आस-पास के लोगों द्वारा उकसाए जाते हैं पर सिद्धांत की खींचना अतिशयोक्ति और कल्पना से भरा हुआ है। यह सच है

Scanned with CamScanner

कि माता-पिता विरोधी लिंग के बच्चे से अधिक प्यार रखते हैं। माँ के लिए पुत्र आँखों का तारा होता है तो पिता के लिए नन्हीं सी गुड़िया को दुलारना एवं पुचकारना अधिक पसन्द आता है। फिर यह आवश्यक हो जाता है एवं स्वाभाविक हो जाता है कि बच्चे उसी को ज्यादा प्रेम करते हैं। जिससे उसे अधिक प्यार मिलता है। इसका अर्थ यह हुआ कि लैंगिक चुनाव बच्चे नहीं माता-पिता करते हैं। Oedipus complex का आधार यही हो सकता है। इसके अतिरि माता के प्रति लड़कियों की घृणा एवं पिता के प्रति लड़कों की घृणा इतनी व्यापक नहीं होती है। जितना कि फ्रायड एवं उनके अनुयायी बताते हैं।

4. अप्रत्यक्ष अवस्था या सुषुप्तावस्था (Latency stage) — पा से आठ वर्ष की उम्र में शिशुओं की लैंगिकता सुषुप्तावस्था में चली जाती है। इसका जोर सीमा पड़ जाता है क्योंकि इस अवस्था में उनकी रुचि बाहर की चीजों में बढ़ जाती है। भागना, दौड़ना, खेलना तथा अपनी आयु के साथियों के साथ दल बनाना उनके जीवन का प्रमुख व्यापार बन जाता है। उनके अन्दर सामाजिक भावना का उदय होने लगता है। लोग क्या कहेंगे का भय उसे लैंगिक कार्यों में भाग नहीं लेने देता। इस अवस्था में बालक माता-पिता द्वारा प्रदर्शित प्रेम को भी पसन्द नहीं करते हैं। घर में कोई बड़ा आदमी उनके सिर पर प्यार से हाथ फेरकर आशीर्वाद देना चाहे या चूमने की चेष्टा करे तो वे घबरा उठते हैं। यद्यपि